मरूमेघ
किसान ई – पत्रिका
www.marumegh.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
©2020 marumegh
ISSN:2456-2904

मूंगफली के प्रमुख रोगों का प्रबंधन

अनीता पूयाम', सुनैना बिष्ट एवं वैभव सिंह
रानी लक्ष्मी बाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झाँसी (उत्तर प्रदेश)
*anitapau6243@gmail.com

सारांश

मूंगफली एक महत्वपूर्ण तिलहनी फसल है, जो की कम पानी और वर्षा आधारित खेती में भी अच्छी पैदावार दे सकती है। वर्षा आधारित फसल होने के कारण यह बुंदेलखंड के वातावरण के अनुरूप उपयोगी साबित होती है । ना केवल यह फ़सल खाने और तेल के उत्पादन के लिए उपयोगी है, इसके अतिरिक्त मूंगफली की फसल मिटटी में नत्रजन और उर्वरता को बढ़ता है, जिसे हम मृदा के लिए जैविक खाद के रूप भी प्रयोग कर सकते है। मूंगफली की फ़सल में अनेक कारणों से उत्पादकता में कमी हो जाती है जिसमे कुछ रोग प्रमुख रूप से उतरदायी है, जिनके निवारण एवं बचाव जानना जरूरी है । इस लेख मे मूंगफली में होने वाले प्रमुख रोग और उनके निवारण के विषय मे उलेख किया

परिचय

मूंगफली भारत की एक प्रमुख तिलहनी फसल है, जो की बुंदेलखंड के वातावरण के अनुरूप उपयोगी है क्यूंकि यह फसल कम पानी और वर्षा आधारित खेती में भी अच्छी फसल दे सकती है । इसके अतिरिक्त मूंगफली की फसल मिटटी में नत्रजन और उर्वरता को बढ़ता है, जिसे हम मृदा के लिए जैविक खाद के रूप भी प्रयोग कर सकते है । मूंगफली फसलौत्पदन में अनेक कारणों से उत्पादकता में कमी हो जाती है जिसमे कुछ रोग प्रमुख रूप से उतरदायी है, जिनके निवारण एवं बचाव जानना जरूरी है ।

मूंगफली के प्रमुख रोग

मूंगफली में चार तरह के रोग प्रमुख है:

1.ग्रीवा विगलन 2. सुखा गलन 3.पर्ण धब्बे 4.रतुआ (तनेज)

इन रोगों को दो तरह से समझ सकते है, एक जो जड़ और तने में आतें है जिसमें सुखा गलन और ग्रीवा विगलन और दूसरा पत्तियों में पर्ण धब्बे और रतुआ प्रमुख रोग हैं ।

जड़ एवं तनो के रोग एवं प्रबंधन

मूंगफली में बुवाई के बाद पहला रोग ग्रीवा विगलन है, जो बीज अंकुरण होने से पहले या होने के बाद भी आ सकता है। इस रोग के प्रकोप से बीज जमीन से निकलने से पहले ही सड़ जाते हैं जिससे 50 से 90 प्रतिशत उत्पादन में नुकसान हो सकता हैं । अगर रोग अंकुरण के बाद आया तो ताने में जड़ से धोड़ा ऊपर मृदा से सटे हिस्से में काले धब्बे दिखने शुरू हो जाते है, जो बाद में दूसरे हिस्सों में भी फैल जाते है । इसके कारण ऊतक गलना शुरू हो जाता है और अन्ततः पौधा सुख जाता है ।

सुखा गलन रोग पौधे की किसी भी अवस्था में आ सकता है, इसमें जड़ और तने में नुक्सान करता है । तने में काले धब्बे आने से तने के ऊतक कमजोर हो जाते हैं और तना टूट जाता है । अत्याधिक प्रकोप होने पर लगी मूंगफली भी सड़ जाती है, जिससे 25 से 40 प्रतिशत तक का नुकसान हो सकता है । इन रोगों के प्रबंधन इस प्रकार हैं :

पहला- रोग मुक्त बीज किसी विश्विसनिये स्त्रोत से ही प्राप्त करें।

दूसरा- बुवाई से पूर्व कवक नाशको से बीजौप्चार करें, इसके लिए तीन ग्राम थिरम या कॅप्टन को प्रति किलोग्राम बीज में मिला कर ही बोना चाहिए । ऐसे करने से हम आपने पौधों को सुखा गलन और ग्रीवा विगलन से बचा सकते है । कवक नाशको के अलावा जैव नियंत्रण भी रोग की रोकथाम के लिए उपयोगी हैं । जैव कारक जैसे की ट्रेकोदेर्मा विरिडे से बीजौप्चार करने के लिए चार ग्राम प्रति किलोग्राम बीज में मिला कर ही बोएँ । इससे न केवल रोग की रोकधाम होगी बल्कि ये पोधो के रोग प्रतिरोधन में वृद्धि के साथ पौधे के विकास मे भी सहयोगी है ।

तीसरा- हमें यह देखना चाहिए की जिस खेत में हम बुवाई कर रहें हैं वह मृदा स्वस्थ है या नहीं द्य मृदा को भी कवकनाशी से उपचारित किया जा सकता है, जिससे कोई भी रोग जनक कवक होगा तो वह मर जाएंगे और रोग के प्रकोप को कम किया जा सकता हैं । मृदा उपचार हेतु ब्रसिकोल नामक कवकनाशी का 25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से उपयोग कर सकते हैं । इसको दो भाग मे देने है – एक भाग बुवाई पूर्व और दूसरा भाग पंद्रह दिनों के बाद करना चाहिए । मृदा उपचार हेतु भी हम ट्रेकोदेर्मा विरिडे का 2.5 किलोग्राम सूत्रीकरण को 100 किलोग्राम गोबर की खाद में मिला कर छाए वाली जगह में 30 दिनों के लिए रख दें । तीस दिनों पश्चात गोबर की खाद पर सफ़ेद रंग की कवक का जाल बन जायेगा जो की प्रयोग के लिए तयार है ।

चौथा- जिस खेत में मूंगफली लगती हो उस खेत में गेहूँ और चने को नहीं लगाना चाहिए ।

पांचवा- यदि रोग के लक्षण देखाई देते हैं तो तुरंत कवक्नाशक मेंकोजेब को 3 ग्राम प्रति लीटर की दर से छिडकाव करें।

पत्तियों के रोग एवं प्रबंधन

पत्तियों में आने वाला रोगों के लक्षण पर्ण धब्बेको हम टिक्का रोग भी बोलते है । यह दो तरह के होते हैं, एक जो बुवाई के 30 दिन के भीतर प्रभावित करता है उसे अगेती पर्ण धब्बा और दूसरा जो बुवाई के 35 दिन बाद आता है उसे पछेती पर्ण धब्बा कहते हैं ।दोनों रोगों के लक्षण देखने में एक जैसे लगते हैं पर अगेती पर्ण धब्बे पत्तियों के उपरी भाग में पहले दिखाई देते हैं जो हलके भूरे रंग के होते हैं और चारो ओर हलके पीले रंग के प्रभामंडल से घिरे होते हैं, इनका आकार अनियमित होता है ।पछेती पर्ण धब्बे में पत्तियों पे बहुत सारे गोल–गोल गहरे भूरे रंग के धब्बे दिखाई देते है जो पत्तियों के निचले हिस्सों को ज्यादा प्रभावित करते हैं द्य पछेती पर्ण धब्बे अगेती धब्बे से छोटे होते हैं । दोनों रोगों में धब्बे समय के साथ काले रंग के हो जाते हैं और पत्तियाँ सूख जाती हैं । इन पर्ण धब्बो की वजह से पैदावार में 50 से 80 प्रतिशत तक का नुकसान हो सकता है ।

रतुआ रोग के लक्षण भी पत्तियों में ही दीखते है, इसमें पहले पीले रंग का उभरा हुआ धब्बा पत्तियों के पिछले हिस्से में दिखाई देता है जो बाद में लाल से गहरे भूरे रंग के हो जाते हैं । इन धब्बों से फफूंद के बीजाणु भारी मात्रा में निकलतें हैं, जो हवा के साथ फैल कर नई पत्तियों को प्रभावित करतें हैं । इस रोग से पैदावार में 70 प्रतिशत तक का नुकसान हो सकता है ।

पत्तियों को प्रभावित करने वाले रोगों के प्रबंधन के लिए

पहला- रोग मुक्त बीज किसी विश्विसनिये स्त्रोत से ही प्राप्त करें ।

दूसरा- बुवाई से पूर्व कवक नाशको से बीजौप्चार करें, इसके लिए तीन ग्राम थिरम या कार्बेन्डाजिम को प्रति किलोग्राम बीज में मिला कर ही बोना चाहिए । कवक नाशको के अलावा जैव नियंत्रण भी रोग की रोकथाम के लिए उपयोगी हैं, जैव कारक जैसे की ट्रेकोदेर्मा विरिडे से बीजौप्चार करने के लिए चार ग्राम प्रति किलोग्राम बीज में मिला कर ही बोएँ ।

तीसरा- फसल का चक्रीकरण एवं खेत की स्वछता का ध्यान रखें।

चौथा-रतुआ के रोकथाम के लिए बाजरा और ज्वार की अन्त्वर्तीये फसल लें ।

पाँचवा- बुवाई के 35 से 50 दिनों के भीतर यदि रोग के लक्षण देखाई देने पर कवकनाशी कार्बेन्डाजिम का 1 ग्राम या मेंकोजेब का 3 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिडकाव करें । आवशयकता अनुसार 14 दिनों के अन्तराल पर दुबारा छिडकाव करें, ताकि रोग दुबारा न आये ।

कवकनाशक एक प्रकार के रसायन हैं जो मृदा में अवशेष छोड़ने के कारण वातावरण एवं जीव जंतुओं के लिए हानिकारक हैं, इसीलिए बताई गयी मात्रा के अनुसार ही कवकनाशको का उपयोग करें । इन रोग प्रबंधन तकनीको के माध्यम से किसान रोगों का सफल रोकथाम करके अधिक पैदावार प्राप्त कर सकते हैं, जिससे उनकी आमदनी में वृद्धि होना स्वाभाविक है ।